# शोध परिचय

## 1.1 - उद्देश्य

किसी भी कार्य के पीछे कोई न कोई उद्देश्य निहित रहता है। बिना किसी उद्देश्य के कोई कार्य नहीं हो सकता, जिस कार्य के पीछे कोई उद्देश्य नहीं होता उसे निरर्थक माना जाता है। यही विधि प्रत्येक शोध कार्य, लघु शोध कार्य या अनुसंधान के लिए भी लागू होती है। बिना उद्देश्य के कोई भी शोध कार्य पूर्ण नहीं हो सकता उसके पीछे कोई न कोई उद्देश्य अवश्य रहेगा और कहीं न कहीं इन उद्देश्यों के पीछे एक सामाजिक या देश हित भावना अदृश्य रूप में काम करती हैं।

इस लघु शोध अध्ययन के माध्यम से कुछ उद्देश्य निहित हैं। यह आध्ययन विशेषकर सिनेमा से संबन्धित समाज एवं सिनेमा से प्यार करने वाले दर्शक वर्ग के लिए है इससे आम जन मानस भी शशि कपूर के कार्यों से अवगत होगा, जो अब तक उन्हे सिर्फ एक अभिनेता के तौर पर ही जनता था

शोध कार्य का उद्देश्य शशि कपूर की सिने यात्रा और उनके जीवन के सफर को समझना तथा उनके कार्य का मूल्यांकन कर उनके कार्य को समाज के सामने लाना है। शशि कपूर ने अपना जो बहुआयामी योगदान सिनेमा में दिया उसका सही से मूल्यांकन नहीं हो सका हालांकि उन्हे अभी भारतीय सिनेमा का सर्वोच पुरस्कार दादा साहब फालके सम्मान प्रदान किया गया। लेकिन यह सम्मान पाने के बाद भी कहीं न कहीं शशि साहब केवल एक वर्ग विशेष में ख्याति प्राप्त करते नज़र आते हैं।

आम जनमानस के पटल पर आज भी शशि कपूर केवल एक रोमांटिक अभिनेता के रूप में ही स्थापित हैं। इस लिए मेरा उद्देश्य यही रहेगा कि उन्होंने जो महत्वपूर्ण कार्य सिनेमा में किया है, उसका मूल्यांकन कर उस कार्य को समाज के सामने ल कर उन्हे सिनेमा में उन्हें उनकी जगह पर कायम कर सकूँ क्योंकि शशि जी को वह स्थान सिनेमा में नहीं मिल पाया जिसके वह हकदार थे।

नीचे कुछ निम्नलिखित बिन्दुओं द्वारा इस शोध कार्य के उद्देश्यों को दर्शाया गया है –

प्रमुख उद्देश्य -

- शशि कपूर के व्यक्तित्व और कृतित्व को समाज के सामने लाना।
- उनके द्वारा सिनेमा और रंगमंच में किए गए कार्यों का अवलोकन।
- उनके अभिनय पक्ष को समझना।
- भारतीय हिन्दी सिनेमा में शशि कपूर के स्थान को सुनिश्चित करना।

## 1.2 - अध्ययन की आवश्यकता-

शशि कपूर के जीवन और उनकी सिने यात्रा पर अध्ययन की आवश्यकता इस लिए महसूस हुई क्योंकि उनके कार्य को समाज के सामने लाना जरूरी है। आज जब उन्हें भारतीय सिनेमा का सर्वोच्च सम्मान दादा साहब फाल्के पुरस्कार से सम्मानित किया जा चुका है तब भी लोगों से पूछने पर कि शशि कपूर कौन हैं ? एक ही उत्तर मिलता है ‘ शायद फिल्मों में काम करने वाले एक अभिनेता हैं इसके अलावा उनके सिनेमा और रंगमंच में दिये गए बहुआयामी योगदान को कोई नहीं जनता अगर सिनेमा के एक प्रबुद्ध वर्ग को छोड़ दें तो।

वह केवल एक अभिनेता ही नहीं थे। इन्होंने सिनेमा में अपना बहुआयामी योगदान भी दिया है। लेकिन जिस प्रकार का शशि कपूर ने कार्य सिनेमा और रंगमंच में किया उसके बराबर उन्हें वह स्थान प्राप्त नहीं हुआ जो उन्हें मिलना चाहिय था। उनके काम को सही तरह से परखा नहीं गया आज अगर शशि कपूर का जिक्र किया जाता है तो वह केवल एक रोमांटिक अभिनेता के रूप में, जो केवल पर्दे पर हस्ता गाता डांस करता दर्शकों का मनोरंजन करते हुये नज़र आता है। हो सकता है कि सिनेमा को समझने वाला कोई

प्रबुद्ध वर्ग शशि कपूर के कार्य को समझता हो लेकिन उस वर्ग विशेष के समझने से उन्हें वह स्थान प्राप्त नहीं होगा जो उनके समकक्ष अभिनेताओं को मिला।

उनके अपने ही परिवार के और कपूर लोगों को जो ख्याति मिली शायद वह शशि जी को नहीं मिल सकी। इसका एक कारण यह भी है कि शशि जी के काम को परखा ही नहीं गया उन पर कुछ लिखा नहीं गया जबकि पृथ्वी राज कपूर, राज कपूर, शम्मी कपूर जैसे और कपूर लोगों पर लिखा जा चुका है। और आज विश्व के सामने उनके काम को और उनके सिनेमा में दिये गए योगदान को प्रकाशित किया गया है। लेकिन इस प्रकार का कार्य शशि जी पर नहीं हुआ और अगर हुआ भी होगा तो वह केवल अंश मात्र ही है जो अभी तक आम जनमानस तक नहीं पहुंचा है। उनके संबंध में अगर कोई जकारी तथ्यों सहित प्राप्त करनी हो तो आपको कोई किताब नहीं मिलेगी जो मुख्य रूप से शशि कपूर के ऊपर लिखी गई हो या कोई ऐसा शोध कार्य नहीं मिलेगा जो सिनेमा में उनके कार्य को लेकर हुआ हो।

जबकि शशि साहब सिनेमा के किसी भी क्षेत्र में और कपूर शख्सियतों से कम नहीं रहे बल्कि वह तो औरों से ज्यादा सिनेमा के प्रति संवेदनशील नज़र आते हैं। जब उनके सिनेमा में बहुआयामी योगदान पर एक नज़र डाली जाती है । तब पता चलता है कि वह एक फिल्म निर्माता रहे हैं उन्होंने फिल्मों का वितरण भी किया अपनी फिल्म कंपनी को भी स्थापित किया जिसके द्वारा उन्होंने कलात्मक फिल्मों के जाने माने निर्देशकों के साथ कई कलात्मक फिल्मों का निर्माण किया और लगभग एक के बाद एक सारी फिल्मों में घाटा खाते रहे लेकिन उन्होने जब तक हिम्मत रही एक कलात्मक सिनेमा बनाने की कोशिश की और सिनेमा को एक नई धारा में मोड़ने का प्रयत्न करते रहे उन्होने अपनी सारी गाढ़ी कमाई सिनेमा बनाने में खर्च कर दी।

क्या फर्क पढ़ता अगर शशि कपूर भी और निर्माताओं की तरह केवल पैसा कमाने के लिए फिल्में बनाते उनके पास उस समय पैसा था नाम था वह उस समय के किसी भी निर्देशक के साथ मिलकर एक मसाला

फिल्म का निर्माण करते और अच्छा मुनाफा कमाते क्यों वह एक उत्सव जैसी क्लासिक फिल्म का निर्माण करते हैं ? क्यों वह जुनून बनाते हैं ? क्यों वह एक बृद्ध टीचर के ऊपर उसके एकाकी जीवन की कहानी को उठाते हैं जिसमें केवल जीवन का दर्शन है ? क्या उन्हें नहीं पता था कि यह दौर ऐसी फिल्मों का नहीं है लेकिन उनकी एक जिद थी कि वह केवल ऐसे सिनेमा का निर्माण करेंगे जिसके पीछे दर्शन हो संदेश हो समाज को समझने वाली दृष्टि हो वह अपने कार्य में सफल भी हुये उनकी फिल्मों को बौद्धिक स्तर पर सराहा भी गया लेकिन इनमें से कोई भी फिल्म बड़ी हिट साबित न हो सकी।

अगर उनके अभिनय की बात की जाए तो जिन्ना, मुहाफ़िज़, दीवार, जब जब फूल खिले, सिद्धार्थ, हाउस होल्डर, जुनून, विजेता, कलियुग, कभी कभी आदि बहुत सी ऐसी फिल्में हैं, जिसमें शशि कपूर ने अपने अभिनय की अमिट छाप छोड़ी है इसके साथ ही उन्होंने अंग्रेजी प्रधान फिल्मों में भी मुख्य अभिनेता के रूप में काम किया है जो कबीले तारीफ है। वह हिंदीसिनेमा के पहले अभिनेता रहे हैं जिन्होंने विश्वस्तर के सिनेमा में अपनी जगह बनाई। ऐसे व्यक्ति के कार्य को समाज के साने लाना आवश्यक है और मैं अपनी तरफ से पूरी कोशिश करूंगा की शशि कपूर के कार्य और उनके योगदान कोइस शोध कार्य के द्वारा समाज के सामने तथ्यों के साथ पेश कर सकूँ।

## 1.3 - शोध कार्य का महत्व

भविष्य में कपूर परिवार या शशि कपूर से संबन्धित शोध कार्यों में इस शोध कार्य के दौरान संकलित जानकारी और तथ्य भविष्य के शोध कार्यों के लिए महत्वपूर्ण साबित होंगे। इस शोध कार्य के दौरान जो तथ्य प्राप्त हुये और इस दौरान जो लोग मिले उनसे जो जानकारी प्राप्त हुई उसके आधार पर कह सकता हूँ कि अगर कपूर परिवार में शशि कपूर को छोड़ दिया जाए तो पृथ्वी राज कपूर, राज कपूर, शम्मी कपूर, बाकी अन्य कपूरशख़्सियतों पर बहुत कुछ लिखा और छापा जा चुका है। लेकिन शशि कपूर पर ऐसा कोई शोध कार्य अभी तक सामने नहीं आया या फिर जो सामाग्री उपलब्ध है वह सीधे तौर पर शशि कपूर

पर नहीं है और कपूर्स के बारे में पढ़ते हुये कुछेक पन्ने शशि कपूर के जीवन से संबन्धित सामने आ जाते हैं या फिर इन्टरनेट पर बिना तथ्यों के केवल सूचना मात्र लेख जो उनको समझने के लिए काफी नहीं हैं। और न ही इन्हें किसी कार्य के लिए आधार बनाया जा सकता है। भविष्य में यह शोध कार्य सिनेमा समाज के लिए महत्वपूर्ण साबित हो यही मेरी कोशिश होगी ।

नीचे कुछ महत्वपूर्ण बिन्दु दिये गए है जो इस शोध कार्य की महत्ता और उसके लाभ को दर्शाते हैं-

- इस शोध का महत्व उन सिनेमा प्रेमियों के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण सिद्ध होगा जो सिनेमा से प्यार करते हैं या फिल्म निर्माण के क्षेत्र मे जाना चाहते हैं।
- यह शोध प्रेरणादायी साबित होगा, सिनेमा के उस वर्ग के लिए जो अभिनय के क्षेत्र में कार्य करना चाहता हैं।
- इस शोध का लाभ उन सिनेमा प्रेमियों को मिलेगा जो शशि कपूर को करीब से जानना चाहते हैं।
- यह शोध कार्य भविष्य में शशि कपूर से जुड़ी किसी भी जानकारी को प्राप्त करने के लिए महत्वपूर्ण साबित होगा।
- इस शोध का लाभ भविष्य में उन शोधार्थियों को मिलेगा जो कपूर परिवार से संबन्धित विषय पर कार्य करने का प्रयत्न करेंगे।

## 1.4 - शोध समस्या

शोध समस्या की स्पष्ट रूप से पहचान कर उल्लेख करना एक कठिन कार्य होता है लेकिन जब तक समस्या हमारे समक्ष स्पष्ट रूप से प्रकट नहीं हो जाती, तब तक एक अच्छा शोध कार्य कर पाना संभव नहीं होता।

टाउनसेंड (1953) के शब्दों में :-

"समस्या एक ऐसा प्रश्नवाचक कथन हैं कि जिसमे एक समस्या के समाधानों को प्रस्तावित किया जाता हैं।"

प्रस्तुत शोध कार्य की समस्याएँ निम्नलिखित हैं :-

- शशि कपूर का रंगमंच से सिनेमा तक का सफर कैसा रहा।
- उनके सिनेमा की यात्रा के दौरान आए उतार-चढ़ाव का उनके जीवन पर क्या प्रभाव रहा।
- अभिनेता, निर्माता, निर्देशक, के तौर पर और सिनेमा में आज उनका स्थान।

## 1.5 - प्राकल्पना

जब शोधकर्ता किसी शोध समस्या का चयन कर लेता है तो वह उसका एक अस्थाई समाधान एक जांचनीय प्रस्ताव के रूप में करता है इसी जांचनीय प्रस्ताव को तकनीकी भाषा में प्राकल्पना कहते हैं।

मेक्युगन 1990 के अनुसार-

"दो या दो से अधिक चरों के बीच संभावित संबंधों के बारे में बनाये गये जांचनीय कथन को प्राकल्पना कहते हैं"

शशि की व्यस्तता पर फिल्मकार मृणाल सेन ने एक टिप्पणी की थी कि शशि एक फिल्म में तौलिया लपेटकर बाथरूम में प्रवेश करते हैं और दूसरी फिल्म में पैंट के बटन लगाते बाहर निकलते हैं। आखिर यह आर्टिस्ट का कैसा रूप है?

- शशि कपूर राजकपूर से भी बड़ा नाम हो सकतेहैं।
- उनका जिस प्रकार का काम है वो सिनेमा को किसी और दिशा में ले जा सकता है।
- उनके द्वारा बनाई गई फिल्मों का अगर दुबारा अध्ययन किया जाये तो सिनेमा को फिल्म बनाने के क्षेत्र मे एक नई सोच और दिशा मिल सकती है।
- वह रंगमंच और सिनेमा के प्रति बहुत संवेदनशील व्यक्ति हैं।
- वह एक कलाकार के साथ-साथ एक सामाजिक कार्यकर्ता के रूप में भी कार्य करते हैं।

## 1.6 - उपयुक्त शोध प्रविधि

**साक्षात्कार विधि-**

उपरोक्त विधि में शशि कपूर से व्यक्तिगत रूप से जुड़े व्यक्तियों तथा कपूर परिवार के सदस्यों का साक्षात्कार लिया, उनसे शशि कपूर के जीवन और उनकी सिने यात्रा के बारे में बात की।

**साहित्य अवलोकन / कंटैंट अनाल्सिस-**

उपरोक्त विधि द्वारा मैंने शशि कपूर से संबन्धित जो भी मुझे प्राप्त होता गया उसका अध्ययन किया। जिसमें मुझे मुख्य रूप से शशि कपूर पर कोई किताब नहीं मिली हाँ कुछ लेख और पत्रिकाओं तथा अखबारों से प्राप्त हुये इंटरनेट से भी शशि कपूर के बारे में जो भी जानकारी उपलब्ध हो सकी उसको अपने साहित्य अवलोकन में शामिल किया बाकी अनेक पुस्तकालयों में जा कर विषय से संबन्धित साहित्य की खोज की।

**प्रोपोसिव सेंपलिंग** –

प्रिंट, पत्रिकाएँ, किताब, श्रव्य माध्यम, दृश्य माध्यम, जिस माध्यम से जैसी भी सामग्री प्राप्त होती गई मैं अपने शोध कार्य में उसे शामिल करता गया और उसी के अनुसार मैंने अपने शोध कार्य को पूरा किया।

## 1.7 - शोध की सीमा

यह शोध व्यक्तिपरक है और शशि कपूर के व्यक्तिगत जीवन के बारे में बताते हुये उनकी पारिवारिक पृष्टभूमि तथा उनके परिवार को भी इसमें विश्लेषित करना है। उसके बाद शशि कपूर के सिने सफर का अवलोकन कर उनकी अब तक कि सिने यात्रा के बारे में तथ्यों सहित अध्ययन करना है।शोध की सीमा में वह सभी क्षेत्र आएंगे हैं जो शशि कपूर से किसी न किसी रूप में संबंध रखते होंगे और वह व्यक्ति भी जो शशि जी के बारे में जानकारी रखते हैं।

*********